



eduresourceza.com



NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2023

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours

70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines

निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो पर पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

प्रश्न एक

कविता: किरण

१.१ १.१.१ निम्नलिखित पंक्तियों का सही अर्थ समझाए ।

“किरण! तुम क्यों बिखरी हो आज, रँगी हो तुम किसके अनुराग,
स्वर्ण सरजित किंजल्क समान, उड़ाती हो परमाणु पराग।”

ये पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कविता 'किरण' से ली गयी हैं। कवि कहता है कि हे किरण तुम आज जो अपनी चमक से बिखरी रही हो उसमे किसी का प्रेम छुपा हुआ है । तुम्हारे सुनहरी चमक में अनोखी आभा है। ऐसा लगता है कि तुम प्रेममय होकर अपनी चमक बिखरी रही हो। तुम सुनहरे कण चारों नन्हे-नन्हे परागों के समान उड़ रहे हैं। किरण हँसी लाती है । किरण के गरमी सुखून देते हैं ।

१.१.२ कविता के आरम्भ में कवि क्यों किरणों की बिखरी बाल पर प्रकाश डालते हैं?

कवि सूर्य की किरणों के घुंघराले बालों की बात इसलिए करता है क्योंकि यह एक नई दुल्हन की तरह है जो अपने खुशियों के रंग बिखेरती है और अपने नए घर में सकारात्मक ऊर्जा लाती है। यहाँ उपमा व्यक्त किए जा रहे किसी के प्रति प्रेम का वर्णन करती है। प्रकृति प्रमुख भूमिका निभाती है

१.१.३ चर्चा करें कि कविता की भावना का वर्णन करने के लिए कवि मानव किरण का उपयोग कैसे करता है ।

कवि सूरजमुखी, सूरज और सूरज की किरणों के बारे में बात करता है और वह उसे मानवीय गुण देता है। सूरजमुखी को शिशु के रूप में वर्णित किया गया है। मासूम मासूम और बच्चे की तरह खूबसूरत है ।

कविता: हिमालय**१.२ “हिमालय” कविता पर एक सारांश लिखिए ।**

हिमालय' संसार के किसी पर्वत की जीवन-कथा इतनी रहस्यमयी न होगी जितनी हिमालय की है ! उसकी हर चोटी, हर घटी हमारे धर, दर्शन, काव्य से ही नहीं, हमारे जीवन के सम्पूर्ण निश्चयम से जुड़ी हुई है ! संसार के कसीस अन्य पर्वत की मानव की संस्कृति, काव्य, दर्शन, धर्म आदि के निर्माण में ऐसा महत्व नहीं मिला है, जैसा हमारे हिमालय को प्राप्त है ! वह मनो भारत की संश्लिष्ट विशेषताओं का ऐसा अखंड विग्रह है, जिस पर काल कोई खरोच नहीं लगा सका ! वस्तुतः हिमालय भारतीय संस्कृति के हर नए चरण का पुरातन साथी रहा है ! भारतीय जीवन उसकी उजली छाया में पलकर सुन्दर हुआ ये, उसकी शुभ्र ऊँचाई छूने के लिए उन्नत बना है और उसके हृदय से प्रवाहित नदियों में घुलकर निखरा है ! हमारे राष्ट्र के उन्नत शुभ्र मस्तक हिमालय पर जब संघर्ष की नील-लोहित आग्नेय घटायें छ गयीं, तब देश के चेतनाकेन्द्र ने आसन्न संकट की तीव्रानुभूति देश के कोने-कोने में पहुंचा दी ! धरती की आत्मा के शिल्पी होने के कारन साहित्यकारों और चिंतकों पर विशेष दायित्व आ जाना स्वाभाविक ही था ! इतिहास ने अनेक बार प्रमाणित किया है कि जो मानव समूह अपनी धरती से जिस सीमा तक तादात्म्य कर सका है, वह उसी सीमा तक अपनी धरती पर अपराजेय रहा है !

भारतीय सेना के जवान हमें सुरक्षित रखने के लिए सीमाओं पर दिन-रात काम करते हैं। हिमालय पर्वत भारत के गौरव का एक प्राकृतिक और सुंदर हिस्सा है। वे नागरिकों और देश की प्राकृतिक सुंदरता दोनों की रक्षा के लिए इस सीमा पर तैनात हैं। किसी भी पड़ोसी देश से हमला हो सकता है लेकिन ये जवान अपने देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर देते हैं। हिमालय कविता बताती है कि भारत के लिए देशभक्ति कितनी महत्वपूर्ण है।

१.३ दोनों कविताओं में प्रकृति किस प्रकार प्रमुख भूमिका निभाती है ?

इन दोनों कविताओं में प्रकृति को एक प्रमुख तुलना के रूप में दर्शाया गया है। दोनों कवियों ने प्रकृति के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया है। सूर्य की किरणें और हिमालय प्रकृति का एक हिस्सा है जो हमेशा मौजूद और स्थिर है। यह सृष्टि की रचना है जो सदैव अपने स्थान पर गर्व से खड़ी रहेगी।

प्रश्न दो

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

२.१ “नाथ संभुधनु भंजनिहारा, होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरिकरनी करि करिअ लराई ॥
सुनहु राम जेहि सिवधनुष तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा” ॥

२.१.१ परशुराम के क्रोधित होने का क्या कारण था ?

सीता स्वयंवर में शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए श्रीराम द्वारा शिव-धनुष के टूट जाने के कारण परशुराम क्रोधित हुए।

२.१.२ राम ने किस प्रकार स्वीकार किया कि धनुष उन्हीं ने तोड़ा है ?

राम ने विनम्रतापूर्वक अपराध स्वीकार करने के भाव से यह कहते हुए धनुष तोड़ना स्वीकार किया कि 'शिव के धनुष को भंग करने वाला आपका ही कोई दास है।'

२.१.३ परशुराम ने सेवक और शत्रु के विषय में क्या कहा है?

परशुराम ने सेवक और शत्रु के विषय में बताया कि सेवक वह होता है, जो सेवा कार्य करता है। शत्रु के समान कार्य करने वाले के साथ तो लड़ाई ही करनी चाहिए और जिसने शिव- धनुष तोड़ने का अपराध किया है, वह उनका सेवक नहीं, शत्रु है।

२.२ “सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। नत मारे जैहहिं सब राजा ॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहिं अपमाने ॥
बहु मनुहीं तोरीं लरिकार्ई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं ॥
एहि धन पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार । धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित
सकल संसार” ॥

२.२.१ परशुराम ने क्या चेतावनी दी थी ?

परशुराम ने चेतावनी दी थी कि यदि शिव का धनुष तोड़ने वाले को सभा से अलग नहीं किया गया, तो वे सभा में उपस्थित सभी राजाओं का वध कर देंगे।

२.२.२ लक्ष्मण की किस बात को सुनकर परशुराम को अधिक क्रोध आया था ?

जब लक्ष्मण ने कहा कि उन्होंने अपने लड़कपन में वैसी अनेक धनुहियाँ खेल-खेल में तोड़ दी थीं, तो यह सुनकर परशुराम को अधिक क्रोध आया।

२.२.३ परशुराम के अनुसार लक्ष्मण किसके बस में होकर बोल रहा था ?

परशुराम के अनुसार लक्ष्मण काल अर्थात् मृत्यु के बस में होकर बिना सोचे-समझे बोल रहा था।

२.३ लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना।
का छति लाभु जून धनु तोरें । देखा राम नयन के भोरें ॥
छुअतटूट रघुपतिहिं न दोसू । मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ।
बोले चितइ परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥

२.३.१ लक्ष्मण ने परशुराम के क्रोध को अकारण क्यों कहा ?

लक्ष्मण ने परशुराम के क्रोध को अकारण इसलिए कहा क्योंकि धनुष के टूटने में राम का कोई दोष नहीं है । वह तो उनके छूते ही टूट गया था और पुराने धनुष के टूटने पर क्रोध क्यों करना । लक्ष्मण के अनुसार उनके लिए सब धनुष एक समान हैं, यह कोई विशेष धनुष न था ।

२.३.२ परशुराम ने सभा में अपने स्वभाव के विषय में क्या कहा ?

परशुराम ने सभा में अपने स्वभाव के विषय में कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हैं, इसलिए लक्ष्मण उन्हें सामान्य मुनि न समझें। अब तक वे बालक समझकर ही लक्ष्मण का वध नहीं कर रहे हैं।

२.३.३ लक्ष्मण सभी धनुषों को कैसे मानते थे ?

लक्ष्मण सभी धनुषों को एक-सा मानते थे। उनकी दृष्टि में कोई अंतर नहीं था।

२.४ (घ) कौंसिक सुनहु मंद येहु बालकु । कुटिल काल बस निज कुज घालकु ghalku
भानुबंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असूंक ॥
काल कतल होइहि छन माही । कहऊँ पुकरि खोरि मोहि नाही ॥
तुम्ह हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा ॥

२.४.१ परशुराम ने लक्ष्मण को 'भानुबंस राकेस कलंकू' क्यों कहा है ?

परशुराम के अनुसार लक्ष्मण उन्हें क्रोध दिलाकर अपने कुल का नाशक बन रहे थे। एक बालक होते हुए उनकी धृष्टता सूर्य के समान चमकते उनके कुल के लिए चंद्रमा के कलंक के समान थी।

२.४.२ यहाँ कौंसिक किसे कहा गया है ? कौंसिक को संबोधित कर लक्ष्मण के विषय में परशुराम क्या कह रहे हैं ?

यहाँ कौंसिक विश्वामित्र को कहा गया है। कौंसिक को संबोधित कर परशुराम लक्ष्मण के विषय में कह रहे हैं कि यह बालक मूर्ख और कुटिल है।

२.४.३ परशुराम, कौसिक को, लक्ष्मण को बचाने का क्या उपाय बताते हैं ?

परशुराम कौसिक को लक्ष्मण को बचाने के लिए उपाय का नाशक बन रहा है। बताते हैं कि वे लक्ष्मण को उनके बल, प्रसिद्धि और क्रोध के विषय में बताएँ और नियंत्रित क। परशुराम ने अपने विषय में कहा की वह बाल ब्रह्मचारी है और अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के हैं। सारा संसार उन्हें क्षत्रिय कुल के नाशक के रूप में जानता है क्योंकि उन्होंने कई बार अपनी भुजाओं की ताकत और फरसे से इस धरती को क्षत्रिय राजाओं से मुक्त किया है और ब्राह्मणों को दान में दे दिया है। उन्होंने इस फरसे की मदद से सहस्त्रबाहु की भुजाओं को भी काट डाला है। इसलिए है नरेश पुत्र मेरे इस फरसे को भलीभाँति देख लो और अपने माता-पिता को सोचने पर विवश ना करो क्योंकि इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है ।

प्रश्न तीन

कहानी: पुरस्कार

3.1 3.1.1 मधूलिका ने अपनी देशभक्ति का परिचय कैसे दिया ?

मधूलिका अपने देश से प्रेम करती थी। उसके मन में अपने प्रेम तथा देश के प्रति कर्तव्य के बीच भीषण हलचल हो रही थी। अन्त में देशप्रेम की भावना के प्रबल होने पर उसने कोसल को बचाने के लिए अरुण की योजना सेनापति को बता दी।

3.1.2 पुरस्कार कहानी का सारांश क्या है ?

राजा उस युवती को बहुत पुरस्कार देना चाहते हैं किन्तु वह माना कर देती है, जहाँ उस उपलक्ष्य पर मगध का राजकुमार अरुण भी आया होता है, जो मधूलिका से प्रभावित होता है। वह उससे कहता है कि वो उससे प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता है। किन्तु मधूलिका उसके प्रस्ताव को ठुकरा देती है।

3.1.3 जब मगध के राजकुमार और मधूलिका वृक्ष के पास बैठे थे, तो उस पल और मिलन को वर्णन कीजिए।

'पुरस्कार' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में लेखक ने प्रधान पात्र मधूलिका के प्रेम तथा देशप्रेम के बीच होने वाले मानसिक संघर्ष का महत्वपूर्ण ढंग से चित्रण किया है। अरुण के प्रेम में पड़कर मधूलिका अपने देश के प्रति गद्दारी करने के लिए भी तैयार हो जाती है।

3.1.4 कहानी से आप क्या सबक सीखते हैं ?

एक विषय संदेश, या पाठ है, जिसे पाठक कहानी पढ़कर सीखता है। कभी-कभी किसी कहानी में एक विशेष प्रकार का संदेश होता है, जिसे नैतिक कहा जाता है। नैतिक एक प्रकार का संदेश है जो पाठक को जीवन का पाठ पढ़ाता है, जैसे कि सही या गलत क्या है, कैसे निर्णय लेना है, या अन्य लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना है।

3.1.5 पुरस्कार की कहानी के नायक का नाम क्या है?

'पुरस्कार' कहानी के नायक और नायिका का नाम अरुण और मधूलिका है। पुरस्कार कहानी हिंदी के प्रसिद्ध लेखक 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा लिखित कहानी है। कहानी की मुख्य पात्र एक तरुण आयु की कन्या 'मधूलिका' है।

3.1.6 पुरस्कार का क्या महत्व है ?

शिक्षामें पुरस्कार का विशेष महत्व होता है। इससे छात्रों को बेहतर प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलती है। इसलिए हर शैक्षणिक संस्था को बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर सम्मानित करना चाहिए।

3.1.7 सीखने पर पुरस्कार का क्या प्रभाव पड़ता है ?

'पुरस्कार' जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित एक प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में लेखक ने प्रधान पात्र मधूलिका के प्रेम तथा देशप्रेम के बीच होने वाले मानसिक संघर्ष का महत्वपूर्ण ढंग से चित्रण किया है। अरुण के प्रेम में पड़कर मधूलिका अपने देश के प्रति गद्दारी करने के लिए भी तैयार हो जाती है।

3.1.8 “पुरस्कार” का हिंदी अर्थ कहानी का अनुसार लिखिए ।

पुरस्, दान, फल, इनाम, उपहार, भेंट, आदर, पूजा, आगे करने की क्रिया, किसी प्रतियोगिता आदि में विजेता या बेहतर प्रदर्शन करने वाले को दिया जाने वाला पारितोषिक या इनाम.

3.1.9 मधूलिका ने पुरस्कार के लिए क्या मांगा ?

जब वह अरुण की योजना का रहस्य खोलकर श्रावस्ती दुर्ग की रक्षा में सहायक होती है तो महाराज पुनः उसको पुरस्कार देना चाहते हैं। इस बार मधूलिका पुरस्कार के रूप में राजा से अरुण के साथ अपने लिए भी प्राणदण्ड मांगती है।

अथवा

- 3.2 "पुरस्कार" कहानी पर एक निबंध लिखें और वर्णन करें कि शक्ति और देशभक्ति का चित्रण करते हुए पात्र कहानी को कैसे विकसित करते हैं।

चरित्र चित्रण की दृष्टि से पुरस्कार कहानी के सभी पात्र आदर्श से अनुप्राणित हैं, पर मधुलिका जो कहानी की प्रमुख पात्र है, अपने चारित्रिक वैशिष्ट्य के कारण सर्वोपरि मानी गयी है। कहानीकार ने मधुलिका का चरित्रांकन मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर किया है। उसका चरित्र सामान्य भारतीय नारी चरित्र से भिन्न न होते हुए भी अनेक असाधारण तत्वों से निर्मित है। वह जितनी सरल, भोली, सुन्दर, मधुर और आकर्षक है, अवसर आने पर उतनी ही कठोर, चतुर और साहसी भी है। यद्यपि उसमें नारी हृदय की कमजोरियां विद्यमान हैं, फिर भी उन पर विजय प्राप्त करने की उसमें अपूर्व क्षमता है। आत्माभिमान और कुलशील की रक्षा के लिए वह विषम से विषम परिस्थिति का सामना करने में भी सक्षम है और अपने हृदय की दिव्यता की रक्षा के लिए आत्मबलिदान से भी वह पीछे नहीं हटती। असाधारणरूप से संवेदनशील होने के कारण ही उसे तीव्र अंतर्द्वंद का सामना करना पड़ता है। इसी अंतर्द्वंद के चतुर्दिक प्रतिरोध, आत्मोत्सर्ग, क्षमा, दया, प्रेम और सहनशीलता की सुनहली रेखाएं बिछी हैं। राजकुमार अरुण एक आदर्श प्रेमी है। वह मधुलिका के जीवन का प्रकाश है, उसका दिव्य पुरस्कार है।

कथोपकथन के विचार से पुरस्कार कहानी के संवाद स्वाभाविक, संक्षिप्त, सरल, स्पष्ट और अर्थ से पूर्ण है। वे कथोपकथन कथानक के विकास और पात्रों के चारित्रिक उत्कर्ष में अत्यंत सहायक हैं। पुरस्कार कहानी के कथोपकथनों में मनोवैज्ञानिकता और उतार चढ़ाव का पूरा पूरा ध्यान रखा गया है। इस प्रकार इस कहानी के संवादों में कहीं आंतरिक वेदना, कहीं आंतरिक उद्देग और कहीं आंतरिक निवेदन विद्यमान है। सारांश रूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी के कथोपकथन संतुलित, मौलिक सांकेतिक कलात्मक संक्षिप्त तथा प्रभावोत्पादक है।

देशकाल तथा वातावरण की दृष्टि से पुरस्कार कहानी का परिवेश अत्यधिक आकर्षक, सशक्त तथा प्रभावोत्पादक है। तत्पुगिन वातावरण तथा देशकाल के स्वाभाविक तथा हृदयग्राही चित्रांकन स्थान-स्थान पर मिलते हैं। उदाहरण के लिए कहानी का प्रारम्भ का परिवेश देखने योग्य है - आद्रा नक्षत्र आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़, जिसमें देवदुम्भी का गंभीर घोष। प्राची के एक निरभ्र कोने में स्वर्ण पुरुष झाँकने लगा था - देखने लगा महाराज की सवारी। शैलमाला के अंचल में समतल उर्वराभूमि से सोंधी बास उठ रही थी। नगर तोरण से जयघोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुण्ड उन्नत दिखाई पड़ा है। हर्ष और उत्साह का वह समुन्द्र हिलोरे भरता हुआ आगे बढ़ने लगा। "

प्रश्न चार

नाटक: मैं और केवल मैं

४.१ ४.१.१ इस एकांकी का लेखक कौन थे ?

इस एकांकी का लेखक थे श्री भगवतीचरण वर्मा ।

४.१.२ वर्णन करें कि “मैं और केवल मैं” का लेखक आदर्श और वास्तविक के बीच अंतर कैसे दर्शाता है ?

यह नाटक दिखाता है कि मानव व्यवहार एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करता है। कुछ लोग अच्छे चरित्र वाले होते हैं और सभी रिश्तों में आदर्श बन जाते हैं। कुछ लोग स्वार्थी और ईर्ष्यालु होते हैं। इनकी ईर्ष्या दूसरों को सफल नहीं होने देती। रामेश्वर को अपने काम और निजी जीवन से संघर्ष करना पड़ा। कुछ कार्यस्थल सहयोगियों ने उनका जीवन कठिन बना दिया। इस एकांकी में सिर्फ रामेश्वर एक आदर्शवादी इंसान है, सब के सब स्वार्थी है। असली दुनिया में लोग एक दौड़ में हैं।

४.१.३ रामेश्वर और खन्ना का रिश्ता कैसा था ?

रामेश्वर और खन्ना साथ काम करते थे लेकिन दोस्त नहीं बन सके। खन्ना किसी के अनुभाव की परवाह नहीं था। खन्ना एक बाईमान इंसान था। वह अपने स्वार्थ के लिए सबको नौकरी से निकालने की कोशिश की। वह रामेश्वर को कभी पसंद नहीं करते।

४.१.४ रामेश्वर की निजी जिंदगी में ऐसा क्या होता है जिससे वह बहुत नाराज हो जाते हैं?

रामेश्वर अपनी पत्नी और बच्चे के मृत्यु के समाचार से व्याकुल हो जाता है। वह क्रोध में खन्ना का गला ढबा देता है। अन्त में रामेश्वर यह स्वार्थ भरा संसार त्याग देता है। यह बहुत दुख की बात है कि इंसान एक दूसरे को समझ नहीं कर सकें। यहाँ एक दफ्तर का काम करनेवाला के परिवार के दहान्त हुआ और किसी का परवाह नहीं। उनको हिम्मत या होसला देने चाहिए लेकिन ये लोग उनको काम से निकालना चाहते हैं। दफ्तर के चपरासी रामेश्वर को हमदर्दी देते हैं।

४.१.५ इस नाटक का स्थान कहाँ है?

इस एकांकी एक दफ़्तर में स्थान होते हैं ।

४.१.६ इस दफ़्तर किसकी है ?

इस दफ़्तर का मालिक अंग्रेज़ी टॉमसन है । उसके दफ़्तर में बहुत सारे भारतीय काम करते हैं ।

४.१.७ इस नाटक में "मैं" का प्रयोग करके लेखक का संदेश क्या है?

"मैं" का प्रयोग करके लेखक यह संकेत दे रहा है कि लोग स्वार्थी हैं। आजकल लोग सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं। हमारे परिवार, दोस्तों और सामाजिक दायरे में लोग तभी कोई काम करते हैं, जब उन्हें उससे फायदा हो। कुछ लोगों को मुश्किल में फंसे दूसरे लोगों की मदद करना कठिन लगता है।

४.१.८ "मैं और केवल मैं" में कृष्णचंद्र किस तरह की भूमिका निभाते हैं?

कृष्णचन्द्र दूसरों का नाश करने में भी संकोच नहीं करता। वह रामेश्वर से कहता है कि आज टॉमसन खन्ना से नाराज़ है, अच्छा मोका है। टॉमसन तुम्हें बहुत मानते हैं, इसीलिए तुम उसे अलग कर देने को कह दो । रामेश्वर स्पष्ट कह देता है कि मैं ऐसा किसी पर, कभी नहीं करूँगा । वह केवल "मैं" का ही विचार करता है। रामेश्वर से अपना काम करवाना चाहता है, लेकिन उसे कोई मदद देने को तैयार नहीं है रामेश्वर उसके बहनोई डाक्टर से मिलना चाहता है, पर कृष्णचन्द्रा उसकी बात पर ध्यान नहीं देता । देवनारायण भी उसे यही समझाता है कि दुनिया में कोई किसी का सहायता नहीं करता सब केवल अपने स्वार्थ का ही विचार करते हैं।।

अथवा

निम्नलिखित नाटक “ मैं और केवल मैं” से यह प्रश्न का उत्तर हिन्दी में दीजिए । एक निबंध लिखिए ।

नाटक: मैं और केवल मैं

8.2 “मैं और केवल मैं” एकांकी के बहुत से पात्र अपने स्वार्थ में मग्न रहता है। वे केवल “मैं” का विचार करते हैं, किसी दूसरे का विचार नहीं करते। यह एकांकी का शीर्षक एकदम उचित है क्योंकि शीर्षक हमें नाटक का उद्देश्य समझाता है।

एकांकी का मूल विचार भावनाओं है, जहाँ कि सभी लोग केवल “मैं” का विचार करते हैं । कभी अच्छा परिणाम नहीं आता। यहां भी रामेश्वर और खन्ना की मृत्यु हो जाते हैं । कुछ लोग मतलबी होते हैं । किसी के मौत भी खेल है कुछ लोग के लिए। बुड़ा इनसान होना और कुछ व्यक्ति के जीवन नष्ट करने से, आप वैसे ही फल मिलेंगे। बुड़े करमों का बुड़ा फल मिलते हैं ।

एकांकी में आदर्श और परंपरा के बीच संघर्ष होता है। रामेश्वर एक आदर्शवादी और नायक आदमी है। घर में बिमार होने पर भी वह दफ्तर जाता था और अपना कर्तव्य निभाता था। वह सबका भला चाहता है। वह किसी का बुरा नहीं देख सकता। लेकिन खन्ना बाईमान इंसान था। वह दफ्तर में आकर हमेशा टोमसन जैसे शांत इनसान की चापलूसी करता था। खन्ना अपने स्वार्थ रे लिए सबको नौकरी से निकलवा की कोशीश करता था । प्रतिदिन वह अपनी इच्छा के लिए रोजी-रोटी से निकलवा की कोशीश करता है।

रामेश्वर अपनी पत्नी और बच्चे के मौत के समाचार व्याकुल हो जाता था। वह क्रोध में खन्ना का गला दबा देता है । अंत में रामेश्वर यह स्वार्थ भरा संसार त्याग देता है। रामेश्वर अपनी ही जीवन को अन्त करना पड़ा सिर्फ दूसरे के गलत व्यवहार पर ।

एकांकी में देवनारायण दुनिया की सच्चाई अच्छी तरह जानता है। वह कहता है कि दुनिया वाले को तो सिर्फ “मैं” का ही विचार करता हूं। वह एक काम में डूबे वाले इंसान है। इस एकांकी में सिर्फ रामेश्वर एक कर्तव्यपरायण और आदर्शवादी व्यक्ति है। दूसरा सब स्वार्थी है। अंत में आदर्श की हार होती है और यथार्थ की जीत होती है। यथार्थ में लोग किसी दूसरे का भावनाओं को कदर नहीं करते हैं । यह जीवन में दुख की बात है ।

Total: 70 marks